May 2014 IJRSS Volume 4, Issue 2 ISSN: 2249-2496

गाँधीजी एवं भारत छोड़ो आन्दोलन

मनोरंजन कुमार
शोधार्थी
स्नाकोत्तर इतिहास विभाग
ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

भारत छोड़ो आन्दोलन भारतीय स्वतंत्रता इतिहास का सबसे निर्णायक एवं उत्तेजक आन्दोलन रहा, खासकर बिहार में जिस तरह से आवाम इससे जुड़ा, किसानों का अलग–थलग रहना भी नामुमकिन था। कांग्रेस ने सिद्धान्ततः इस बात को स्वीकार किया कि भारत ब्रिटेन के किसी ऐसे प्रयास का विरोध करेगा जो उसे युद्ध में फँसाने की कोशिश करेगा। 1936–39 के बीच कांग्रेस ने द्वैध नीति को अपनाया, एक ओर उसने इटली, जर्मनी तथा जापान की युद्ध नीतियों की निन्दा की तथा फासीवाद के शिकार देशों के प्रति नैतिक समर्थन का प्रदर्शन किया तो दूसरी ओर कांग्रेस ने शर्त रखा कि भारत फासीवाद या नाजीवाद के विरूद्ध तभी शामिल होगा जब वह स्वयं स्वतंत्र हो जाय।[1]

1 मई 1939 को कांग्रेस ने भारतीयों के समर्थन के बिना उन्हें युद्ध में शामिल किए जाने वाले प्रयासों के विरोध का निश्चय किया। कांग्रेस कार्य समिति ने कांग्रेस मंत्रालयों को सलाह दी कि वे सरकार के युद्ध संबंधी प्रयासों में किसी प्रकार की सहायता न करें। 1939 के प्रथम सप्ताह में द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ हुआ और 3 सितम्बर 1939 की वायसराय लिनलिथगो ने भारतीयों की ओर से धूरी राष्ट्रों के विरूद्ध युद्ध की घोषण कर दी। इससे भारतीय नाराज हुए और 5 सितम्बर 1939 को गाँधी वायसरय से मिले और ब्रिटेन के प्रति नैतिक समर्थन जाहिर किया। उन्होंने माना कि, यद्यपि भारत और ब्रिटेन के बीच भारतीय स्वतंत्रता के प्रश्न पर मतभेद है किन्तु भारत को इस खतरे की स्थिति में ब्रिटेन की सहायता करनी चाहिए।[2] आम भारतीयों में गाँधी के उपरोक्त बयान से काफी रोष उत्पन्न हुआ।[3] सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी कांग्रेस भी मानकर चल रही थी कि दूसरा विश्वयुद्ध भारतीय स्वतंत्रता का द्वार खोलेगा। दूसरी ओर फॉरवर्ड ब्लॉक, समाजवादी और साम्यवादी पार्टियाँ भी ब्रिटेन की पराजय में ही भारत की जय मानते थे। 4 सितम्बर 1939 में कांग्रेस की वर्धा बैठक में फॉरवर्ड ब्लॉक ने अविलम्ब सवतंत्रता संघर्ष शुरू करने पर बल दिया। इस दबाव के कारण 14 सितम्बर 1939 को कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित कर अंग्रेजी सरकार से आत्मनिर्णय का अधिकार प्रदान करने को कहा। कांग्रेस का मानना था कि स्वतंत्र भारत ब्रिटिश सरकार को युद्ध में अधिक सहायता कर पायेगा। इसके फलस्वरूप वायसराय ने 17 अक्टूबर, 1939 को एक श्वेत पत्र जारी कर कहा कि इस महायुद्ध से ब्रिटेन को तत्काल कोई लाभ नहीं होने वाला है, वह तो मात्र शांति के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था कायम करना चाहता था। इस श्वेतपत्र में भारत को औपनिवेशिक स्वराज देने की इच्छा व्यक्त की गयी थी। युद्ध के बाद भारत के विभिन्न दलों एवं वर्गों से बातचीत कर संवैधानिक हल निकाला जायेगा।[4]

ब्रिटिश सरकार के इस घोषणा से कांग्रेस को काफी निराशा हुई, एवं विरोध स्वरूप कांग्रेस ने 22 अक्टूबर, 1938 को निंदा प्रस्ताव पास किया तथा सभी मंत्रियों से त्यागपत्र देने को कहा।[5] फलस्वरूप कांग्रेस में शामिल 8 प्रान्तीय मंत्रालयों ने त्यागपत्र दे दिया। दूसरी ओर कांग्रेसी मंत्रालयों के त्यागपत्र देने की घोषणा को मुस्लिम लीग ने 22 दिसम्बर, 1939 को 'मुक्ति दिवस' के रूप में मनाया।[6] फिर भी गाँधी एवं उनके नेतृत्व में कांग्रेस असहयोग आन्दोलन नहीं चलाना चाहते थे, वे ब्रिटेन के

विनाश पर भारत की स्वतंत्रता नहीं चाहते थे।[7] इस समय भी कांग्रेस ब्रिटिश सरकार से समझौता चाहती थी।[8] 27 जुलाई, 1940 को पूना में हुई एक कांग्रेस कार्य समिति में कहा गया कि भारत सहयोग के लिए तैयार है अगर ब्रिटेन भारत के स्वतंत्रता की मांग को स्वीकार कर ले।

कांग्रेस एवं सरकार के बीच बढ़ते गतिरोध को समाप्त करने के लिए वायसराय ने 8 अगस्त, 1940 को 'अगस्त ऑफर' की घोषणा की।[9] किन्तु भारतीय इससे संतुष्ट नहीं हुए। अंततः जब कांग्रेस के सहयोग के बावजूद सरकार ने उसकी मांग को नहीं माना तब गाँधी के नेतृत्व में सीमित सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाने का निर्णय लिया गया। 15 अगस्त, 1940 को कांग्रेस ने बम्बई अधिवेशन में व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारम्भ करने का निश्चय किया। इस आंदोलन का उद्देश्य नैतिक विरोध करना था एवं कुछ ही व्यक्तियों को आंदोलन करने की अनुमति दी गई, क्योकि गाँधी इसे पूर्णरूपेण अहिंसक आंदोलन बनाना चाहते थे। गाँधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए सर्वप्रथम विनोवा भावे को चुना।[10] इसके बाद एक–एक कर देश में महत्त्पूर्ण में महत्त्वपूर्ण नेताओं ने सत्याग्रह आरम्भ किया और एक के बाद एक गिरफ्तार होते गए। 1941 में अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति काफी संकटपूर्ण हो चुकी थी, सुभाषचन्द्र बोस की सहायता से जापान ने रंगून पर कब्जा कर लिया।

दूसरी ओर अभी तक रूस भारतीय स्वतंत्रता का हिमायती था, किन्तु 12 जुलाई 1941 को ब्रिटेन के साथ उसकी एक सैनिक संधि हुई और अपनी निजी स्वार्थ के चलते रूस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कम रूचि रखने लगा। दसरी ओर अगर भारत स्वतंत्र नहीं हो जाता था, तो ब्रिटिश साम्राज्य, का हिस्सा होने कारण जापानी खतरा लगातार बढ़ता जा रहा था।[11] अमरीका भी मान रहा था कि अगर ब्रिटेन युद्ध के बाद स्वतंत्रता प्रदान करने को तैयार को जाता है, तो निश्चय ही भारतीय युद्ध में ब्रिटेन की खुलकर सहायता करेंगे।[12]

भारतीय समस्या के समाधान के लिए ब्रिटिश सरकार ने 23 मार्च 1942 को क्रिप्स मिशन भारत भेजा। इस मिशन के प्रस्ताव में कांग्रेस, लीग एवं देशी नरेशों को संतुष्ट करने का प्रयास किया गया। किन्तु इस प्रस्ताव से राष्ट्रवादी नेताओं एवं कांग्रेस में कोई उत्साह नजर नहीं आया। कांग्रेस ने इन प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया, क्योंकि इसमें किसी भी प्रकार से भारतीय स्वतंत्रता की बात नही थी। फलस्वरूप भारतीय जनमत ब्रिटेन के खिलाफ होता जा रहा था, जनता मानने लगी थी, कि ब्रिटेन अन्तर्राष्ट्रीय दबाव में ऐसा कर रहा है, इसे भारत को आजादी देने में दिलचस्पी नहीं है।[13]

क्रिप्स प्रस्ताव के बाद गाँधी के विचारों में भी परिवर्तन आया और उन्होंने अनुभव किया कि अंग्रेजी सरकार के समक्ष घुटना टेकने से स्वतंत्रता नहीं मिलेगी। इसके लिए प्रत्यक्ष कार्यवाही की आवश्यकता उन्होंने भी महसूस की।[14] 27 अप्रैल, 1942 को कांग्रेस की कार्य–समिति की इलाहाबाद बैठक में राजेन्द्र प्रसाद ने गाँधी के विचारों पर एक प्रस्ताव रखा, जिसके अनुसार अंग्रेजी सरकार भारत की रक्षा करने में असमर्थ जान पड़ती है और भारतीयों को अपनी प्रतिक्षा का अधिकार नहीं देना चाहती है। अंग्रेजों को भारत को अपने हालात पर छोड़ देना चाहिए। किन्तु कांग्रेस के कई नेता नेहरू, अबुल कलाम, आसफ अली तथा राजगोपालाचारी ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। इनके अनुसार अंग्रेजी सरकार और सेना के अचानक हटने से देश की व्यवस्था भंग हो जायगी और भारत की सुरक्षा को खतरा हो जाएगा।[15] इनके मत से यह स्थिति जापानी आक्रमण को न्योता देने के समान था। दूसरी ओर गाँधी का मानना था कि भारत का जापान या अन्य किसी देश से न तो झगड़ा है और न ही झुकाव, इसलिए इस अप्रत्यक्ष समस्या `स डरने की आवश्यकता नहीं है। साथ ही गाँधी अंग्रेजी सत्ता को

भारत से हटाने की मांग पर अड़े रहे। गाँधी अब हर हाल में भारत की स्वतंत्रता चाहते थे।[16] इनका मानना था कि स्वतंत्र भारत इंग्लैण्ड एवं उसके मित्र देशों को भारत की रक्षा के लिए युद्ध में आवश्यक सहायता दे सकेगा।[17] इनके अनुसार अंग्रेजों का भारत में और अधिक रूकना भारत के लिए खतरा पैदा कर देगा, क्योंकि इस समय गाँधी का विश्वास था कि युद्ध में जर्मनी तथा जापान की जीत होगी। गाँधी ने अंग्रेजों से तुरन्त भारत छोड़ने की अपील की। सरकार पटेल, राजेन्द्र प्रसाद तथा जे0 बी0 कृपालानी ने गाँधी के विचारों का समर्थन किया।

कांगेस के इस अधिवेशन में दो महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव थे एक भारत की स्वतंत्रता और दूसरा भारत को जापान तथा ब्रिटेन की युद्ध भूमि बनने से बचाना। 7 जून 1942 को गाँधी ने एक सभा में स्पष्ट घोषणा की कि ''हमें अपने आजादी के लिए लड़ना होगा क्योंकि आजादी आकाश से नहीं टपकेगी।''[18] गाँधी भारत की स्वतंत्रता के लिए इस समय विदेशी सत्ता के विरूद्ध जन आंदोलन शुरू करना चाहते थे, क्योंकि उनका व्यक्तिगत सत्याग्रह पूर्णतया सफल नहीं रहा था। क्रिप्स मिशन की असफलता के कारण लोगों में प्रतिशोध की ज्वाला भड़क उठी थी तथा इस प्रकार आंदोलन असफल होने की संभावना थी। दूसरी भारत पर जापानी आक्रमण की संभावनाएँ लगातार बढ़ती जा रही थी। फलतः गाँधी ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध तुरन्त कोई ठोस कार्यवाही करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने कांग्रेस कार्य समिति की बैठक वर्धा में बुलाई।

7–14 जुलाई, 1942 को वर्धा में कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक में मौलाना अबुल कलाम आजाद, नेहरू, पटेल, राजेन्द्र प्रसाद, सरोजनी नायडू, सीतारमैया, गोविन्द वल्लभ पंत, प्रफुल्ल चन्द्र घोष, आसफ अली, जे0 बी0 कृपलानी, गाँधी आदि ने भाग लिया। इस बैठक में 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित हुआ। जिसमें ब्रिटेन से तत्काल भारत छोड़ने के लिए कहा गया। इस प्रस्ताव में स्पष्ट किया गया कि विदेशी शासन के कारण अपनी रक्षा करने में असमर्थ था, भारत की स्वतंत्रता न केवल भारत अपितु पुर्ण विश्व की सुरक्षा तथा नाजीवाद, फासीवाद, साम्राज्यवाद एवं निरंकुशतावाद को समाप्त करने में सहायक होती। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया कि युद्ध के समय भारत अंग्रेजों के विरूद्ध आंदोलन शुरू करके ब्रिटेन को किसी प्रकार के संकट में नहीं डालना चाहता था।[19] किन्तु भारतीयों की विनम्र नीति को अंग्रेजों ने ठुकरा दिया और भारत को स्वतंत्र करने की नियत नहीं रखता था। साथ ही स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भारत ऐसा कोई कदम नहीं उठाना चाहता था, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय संघ को किसी प्रकार की क्षति पहुँचे। कांग्रेस ने ब्रिटिश सरकार से अपनी मांगे स्वीकार करने की अपील की और ऐसा नहीं करने पर आंदोलन शुरू करने की धमकी दी।[20]

7 अगस्त 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक बम्बई में हुई। इसमें कुछ संशोधनों के साथ कांग्रेस कार्य समिति का प्रस्ताव पारित हो गया। इस बैठक में ब्रिटिश सरकार से तुरन्त भारत को स्वतंत्र करने की अपील की गई और कहा गया कि इस मांग के नहीं माने जाने पर समिति विवश होकर अत्यधिक व्यापक पैमाने पर गाँधी के नेतृत्व में अहिंसात्मक संघर्ष चलाएगी। भारतीयों से अपील की गयी कि इस आंदोलन का आधार अहिंसा हो और प्रत्येक व्यक्ति अपना मार्ग दर्शन स्वयं करें। जब भी सत्ता आएगी वह सारी जनता की होकर रहेगी।[21] इस अधिवेशन में अबुल कलाम आजाद ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि अब धमकी या वायदे से काम नहीं चलेगा, हमें तुरन्त कोई और कदम उठाना चाहिए। यह उचित समय है कि कांग्रेस कोई और कदम उठाए और ब्रिटिश सरकार कोई निर्णय के लिए बाध्य हो।[22] 8 अगस्त 1942 को लगभग इसी तरह का भाषण नेहरू ने भी देया।[23]

दूसरी ओर अब तक गाँधी के अंग्रेजों के प्रति विचार में काफी परिवर्तन आ चुका था और अब गाँधी के विचार वे नहीं जो कांग्रेस के थे।[24] अब पूर्ण स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए वे कोई भी कदम उठाने को तत्पर थे। गाँधी ने इस समय हिंसा के प्रति अपने विचार बदल दिए तथा कहा यदि युद्ध में दो में से कमजोर हो वह हिंसा का प्रयोग करे तो वह युद्ध भी अहिंसक होगा, अर्थात् शक्तिशाली के विरूद्ध हिंसा का प्रयोग भी अहिंसा होगा। इस प्रकार निहत्थी क्रांति के लिए यह सुविधाजनक सिद्धांत साबित हुआ। गाँधी इस आंदोलन को जन आंदोलन बनाना चाहते थे। इसमें सब साधनों (हिंसात्मक और अहिंसात्मक) का प्रयोग किया जा सकेगा।[25] इन्होंने कहा कि, यह आंदोलन कांग्रेस का अन्तिम प्रयास होगा, इस आंदोलन में या तो हम स्वतंत्रता प्राप्त करेंगे या मर मिटेंगे। इस आंदोलन के बाद सभी भारतीय अपने को स्वतंत्र समझे। एक प्रेस सम्मेलन में गाँधी ने स्पष्ट कहा कि अब एक और अवसर का प्रश्न नहीं है, यह अंतिम खुली बगावत है।[26]

बम्बई अधिवेशन से पूर्व ही राजेन्द्र प्रसाद ने बिहार, नेहरू ने उत्तर प्रदेश, पटेल ने बम्बई तथा अन्य स्थानों पर लोगों ने विदेशी शासन के विरूद्ध आंदोलन शुरू करने के लिए सभाएँ की थी।[27] यद्यपि आंदोलन शुरू करने का संदेश लोगों तक पहुँचाया गया, परन्तु अभी तक कांग्रेस कार्य समिति कोई निश्चित योजना नहीं बनायी थी। हरिजन के 9 अगस्त 1942 के अंक में अहिंसात्मक आंदोलन चलाने तथा विदेशी सरकार को पंगु बनाने कें बारे में विस्तार से छापा था। गाँधी 8 अगस्त, 1942 को अखिल भारतीय काँग्रेस समिति में कहा कि आपने अपनी शक्ति मेरे हाथों में दे दी है। मैं अब वायसराय से भेंट करूँगा तथा उनके द्वारा कांग्रेस की मांग स्वीकार करने की प्रतीक्षा करूँगा किन्तु गाँधी के वायसराय से मिलने के पूर्व ही 9 अगस्त 1942 को गाँधी एवं अन्य कांग्रेसी नेताओं को बंदी बना लिया गया। कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य राजेन्द्र प्रसाद को पटना में नजरबंद रखा गया एवं कांग्रेस, इसकी कार्य समिति एवं प्रान्तीय कांग्रेस समितियों को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया।

गाँधी ने कांग्रेस कार्य समिति में जो अपनी तेरह सूत्रीय कार्यक्रम को रखा था, उसमें उन्होंने भारत के हर नर और नारी से 'करो या मरो' नारा को अपने जीवन का उद्देश्य बनाने का आग्रह दिया था। उनका मानना था कि इससे प्रत्येक व्यक्ति में स्वतंत्रता या इसके संघर्ष में बलिदान देने की भावना बहुत प्रबल हो जायगी।[28] गाँधी के 'करो या मरो' के नारा का मायने था कि या तो भारत को स्वतंत्र कराएंगे अन्यथा इसी प्रयास में मौत को गले लगाऐंगे। जैसा कि हमने पूर्व मं चर्चा की है कि गाँधी ने कहा था कि कुछ भी गुप्त रूप से नहीं किया जाएगा, यह खुली बगावत है।

गाँधीजी की वाणी और लेखनी ने जनता में नयी जान डाल दी। 'अंग्रेजों' भारत छोड़ों' सामान्य भारतीयों का नारा बन गया।[29] जब से द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारंभ हुई कांग्रेस फूँक–फूँक कर कदम उठा रही थी ताकि ब्रिटेन के उद्योग में बाधा नहीं पहुँचे।[30] आशा थी कि अंग्रेजी सरकार कांग्रेस की सद्भावना को समझेगी और भारत को स्वतंत्रता देगी, किन्तु उसे निराशा हाथ लगी।[31] 16 सितम्बर, 1942 को केंन्द्रीय असेम्बली में ब्रिटिश भारत सरकार ने स्वीकार कि अब तक भारत पर सात कई हमले किए, जिसमें 285 लोगोंके मारे गए।[32]

संदर्भ सूची :–

1. नेहरू जवाहरलाल, एन ऑटोबायोग्राफी, लंदन, 1958, पृ0– 161
2. भूइयाँ, ए0 सी0, द क्विट इण्डिया मूवमेन्ट : द सेकेण्ड वर्ल्ड वार एण्ड इण्डियन नेशनलिज्म, दिल्ली, 1957, पृ0– 4
3. राय, सत्या एम, पृ0– 124
4. भूइयाँ, ए0 सी0, पूर्वोक्त, पृष्ठ– 4–5

5. माथुर वाई0 वी0 क्विट इण्डिया मूवमेन्ट, दिल्ली, 1922, पृ0– 117
6. बनर्जी, ए0 सी0 द0 मेकिंग ऑफ इण्डिया कन्स्टीट्यूशन, कलकत्ता, 1945, पृ0– 9
7. बोस, शुभाष चन्द्र, दे इण्डियन स्ट्रगल : 1920–42, बम्बई, 1967, पृ0– 344
8. बोस, शुभाष चन्द्र, दे इण्डियन स्ट्रगल : 1920–42, बम्बई, 1967, पृ0– 344
9. भूइयाँ, ए0 सी0, पूर्वोक्त, पृष्ट– 11
10. विपिन चन्द्रा, अमलेश त्रिपाठी, एवं वरूण दे, फ्रीडम स्ट्रगल, दिल्ली, 1972, पृ0– 214
11. भूइयाँ, ए0 सी0, पूर्वोक्त, पृ0– 26
12. भूइयाँ, ए0 सी0, पूर्वोक्त, पृ0– 26
13. आजाद, मौलाना अबुदुल कलाम, इण्डिया विन्स फ्रीडम, कलकत्ता, 1959, पृ0– 70
14. मित्रा, एन0 एन0 (सं0) इण्डियन एनुअल रजिस्टर, 1942, वोल्यूम – कलकत्ता 1942, पृ0– 171
15. मित्रा, एन0 एन0 (सं0) इण्डियन एनुअल रजिस्टर, 1942, वोल्यूम – कलकत्ता 1942, पृ0– 172
16. हरिजन, 24 मई, 1942
17. आजाद, मौलाना अबुदुल कलाम, इण्डिया विन्स फ्रीडम, कलकत्ता, 1959, पृ0– 78
18. कुलकर्णी, बी0 बी0 द इण्डियन ट्रियुमविरेट : ए पॉलिटिकल बॉयोग्राफी ऑफ गाँधी, पटेल, नेहरू, बम्बई, 1969, पृं0– 175
19. इण्डियन नेशनल कॉग्रेस : मार्च, 1940, सितम्बर, 1946, इलाहाबाद, ए0 आई0 सी0 सी0 स्वराज भवन, 1946, पृ0– 117–712
20. इण्डियन नेशनल कॉग्रेस : मार्च, 1940, सितम्बर, 1946, इलाहाबाद, ए0 आई0 सी0 सी0 स्वराज भवन, 1946, पृ0– 117–712
21. इण्डियन नेशनल कॉग्रेस : मार्च, 1940, सितम्बर, 1946, इलाहाबाद, ए0 आई0 सी0 सी0 स्वराज भवन, 1946, पृ0– 117–712
22. माथुर वाई0 वी0 क्विट इण्डिया मूवमेन्ट, दिल्ली, 1922, पृ0– 26
23. माथुर वाई0 वी0 क्विट इण्डिया मूवमेन्ट, दिल्ली, 1922, पृ0– 26
24. मित्रा, एन0 एन0 (सं0) इण्डिन मनुअल रजिस्टर, पृ0– 181
25. मित्रा, एन0 एन0 (सं0) इण्डिन मनुअल रजिस्टर, पृ0– 183
26. मित्रा, एन0 एन0 (सं0) इण्डिन मनुअल रजिस्टर, पृ0– 183
27. मित्रा, एन0 एन0 (सं0) इण्डिन मनुअल रजिस्टर, पृ0– 184
28. मित्रा, एन0 एन0 (सं0) इण्डिन मनुअल रजिस्टर, पृ0– 212–16
29. प्रसाद राजेन्द्र, ऑटोबायोग्राफी, बम्बई, 1956, पृ0–581–582
30. नारायण, बलदेव, अगस्त क्रांति, पटना (नौवा संस्करण), 2007, पृ0– 17
31. नारायण, बलदेव, अगस्त क्रांति, पटना (नौवा संस्करण), 2007, पृ0– 17
32. फाइल संख्या– 14 1942, पटना डेली न्यूज (अंग्रेजी दैनिक) पृ0– 4, पॉलिटिकल स्पेशल सेक्शन, बिहार राज्य अभिलेखागार